डेली न्यूज़

इंडस्ट्री और इंस्टीट्यूट मिल कर काम करें

शहर आए एच आर एक्सपर्ट्स की सलाह

मेट्रो रिपोर्टर

जयपुर ▷ 11 फरवरी

इंडिया में बेरोजगारी बढ़ने की सबसे बड़ी प्रॉब्लम यही है कि यहां इंडस्ट्री और इंस्टीट्यूट के बीच बिल्कुल भी कॉन्टेक्ट नहीं है। इंस्टीट्यूट अपने अनुसार स्टूडेंट्स को ट्रेनिंग दे रहे है और कंपनीज भी अनस्किल्ड लोगों को जॉब नहीं देना चाहती है। कुछ इसी तरह का डिस्कशन हुआ शुक्रवार को एच आर कॉनक्लेव में। एसएमएस कन्वेंशन सेंटर में शुरू हुई इस कॉनक्लेव की थीम क्रिएटिंग टैलेंट पूलः ट्रांसफॉर्मिंग ऑर्गेनाइजेशन रखी गई है। दो दिवसीय इस कॉनक्लेव में देशभर की बड़ी कंपनियों के एचआर मैनेजर्स भाग ले रहे है। शुक्रवार को उद्घाटन सत्र के अलावा तीन तकनीकी सत्र भी आयोजित किए, जिसमें एक्सपर्ट्स ने ग्लोबल बिजनेस एक्सीलेंस, इंस्टीट्यूट एंड इंडस्ट्री के बीच मिसमैच और एचआर प्रोफेशनल्स की क्वालिटीज के बारे में बताया।

न्यूज
For use

प्राइमरी से हो वोकेशनल ट्रेनिंग

सेमिनार के पहले तकनीकी सत्र में इंदिरा गांधी नहर बोर्ड, राजस्थान के चेयरमैन दामोदर शर्मा ने बताया कि विकसित देश हमसे आगे बढ़ रहे है, क्योंकि वहां का एजुकेशन पैटर्न यहां से बिल्कुल डिफरेंट है। नॉलेज कमीशन ने हाल ही भारत सरकार को एक रिपोर्ट दी है जिसमें कहा गया है कि चाइना में जिस तरह से प्राइमरी क्लास से ही वोकेशनल ट्रेनिंग देते है, उसी तरह यहां भी किया जाना चाहिए। भारत सरकार बजट में भी वोकेशनल ट्रेनिंग के लिए फंड अलग से रख रही है। यह एक सकारात्मक संकेत है।

हर जॉब के लिए साइकोमेट्रिक टेस्ट

ड्यूटसेक बैंक ग्रुप की एचआर डायरेक्टर अपर्णा शर्मा मानती है कि आजकल हर कंपनी डिग्री के साथ-साथ कैंडिडेट का एप्टीट्यूड भी देखती है। हर कंपनी हायर करने के बाद ट्रेनिंग देती है, इसलिए कंपनी कैंडिडेट का एप्टीट्यूड और लर्निंग स्किल्स देखती है। हर तरह की जॉब के लिए अलग तरह का साइकोमेट्रिक टेस्ट होता है। वहीं अब देश में इतने सारे एमबीए इंस्टीट्यूट हो गए है कि एमबीए स्टूडेंट्स की फौज खड़ी हो गई है, इसलिए छोटा और बड़ा कॉलेज मायने ना रखकर स्टूडेंट की क्वालिटीज इंपोर्टेंड है।

चेंज हो रहा है सिनेरियो

सीआईआई नॉर्थ रीजन के चेयरमैन आरएम खन्ना ने कहा कि रिसेशन का साइको हव्वा बनाया गया था, जिसके बाद कंपनियों ने छंटनी करनी शुरू कर दी। वहीं मॉनस्टर डॉट कॉम के मैनेजिंग डायरेक्टर संजय मोदी ने कहा कि कंपनीज अब इंस्टीट्यूट्स को अडोप्ट करने लगी है, इसलिए अब सॉफ्ट स्किल्स रिलेटेड प्रॉब्लम्स भी कम हो गई है। कुछ सालों पहले यह पॉसिबल नहीं था, क्योंकि करिकुलम चेंज करने में परेशानी आती थी। वहीं अब इंस्टीट्यूट्स खुद कंपनीज को अपने स्टूडेंट्स को ट्रेनिंग देने के लिए इनवाइट कर रही है। इंडिया में 45 परसेंट पॉपुलेशन 20 साल से कम है, यह बहुत अच्छी बात है। इस पॉपुलेशन को ट्रेनिंग देकर देश को इकोनोमिक पावर बनाया जा सकता है।

एयर टाइट कंपार्टमेंट से निकलें बाहर

इंस्ट्रूमेंटेशन लिमिटेड के एचआर एंड प्रोडक्शन डायरेक्टर पीएम भारद्वाज के मुताबिक इंस्टीट्यूट और कंपनीज के बीच जो एयर टाइट कंपार्टमेंट बना हुआ है, उससे बाहर निकलने की जरूरत है। ग्लोबलाइजेशन की वजह से जो कॉम्पिटिशन बढ़ा है, उससे टक्कर लेने के लिए यह जरूरी है। गवर्नमेंट को सभी इंस्टीट्यूट के लिए इस तरह का करिकुलम तैयार करना चाहिए, जिससे इंडस्ट्री को स्किल्ड मैन पावर मिले। मिलकर काम करने से इंडस्ट्री को सही मैन पावर मिलने में आसानी होगी।

एजुकेशन रखती है मायने

राजस्थान इलेक्ट्रोनिक्स एंड इंस्ट्रूमेंट्स लि. के उप महाप्रबंधक नीरज सक्सेना के अनुसार, इंडस्ट्री बड़े कॉलेजों में प्लेसमेंट करने में इसलिए इंट्रेस्ट दिखाती है, क्योंकि वहां अच्छी फैकल्टी और ज्यादा केस स्टडीज होती है। अब तो गवर्नमेंट जॉब्स में भी इस बात का ध्यान रखा जाने लगा है। प्राइवेट कंपनियों की तरह गवर्नमेंट कंपनियों में भी इनका एग्जाम लिया जा रहा है।

सॉफ्ट स्किल्स और एप्टीट्यूड महत्वपूर्ण

एचआर प्रोफेशन में क्या क्वालिटी होना जरूरी है?
एचआर प्रोफेशन में एप्टीट्यूड होना बहुत जरूरी है। शुरुआती दौर में लर्निंग स्किल और बाद में कंपनी और एंप्लॉइज के बीच सामंजस्य बनाना आना चाहिए। इसके लिए सॉफ्ट स्किल्स, एप्टीट्यूड और गुड बिहेवियर जरूरी है।

एमबीए डिग्री के बाद किस तरह के प्रोफेशनल कोर्स किए जाने चाहिए?
एमबीए डिग्री के साथ-साथ पर्सनलिटी और इंग्लिश इंप्रूवमेंट पर स्टूडेंटस को ध्यान देना चाहिए। बड़ा या छोटा इंस्टीट्यूट महत्व कम रखता है, कैंडिडेट की सेल्फ स्किल्स महत्वपूर्ण है।

फाइनेंस, मार्केटिंग और एचआर किसमें जॉब्स ज्यादा है?
रिसेशन के बाद फाइनेंस में मार्केटिंग और एचआर के मुकाबले जॉब अपॉर्च्युनिटीज कम हो गई है। आने वाले दो तीन साल में कई इंटरनेशनल कंपनियां इंडिया में आएंगी, इसलिए सभी सेक्टर्स में जॉब बढ़ेंगी।

स्टूडेंट्स एचआर लेने से पहले सेल्फ एनालिसिस कैसे करें?
एचआर में स्टूडेंट की पर्सनलिटी, बातचीत करने की कला, मैनेज करने का तरीका देखा जाता है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर एचआर लिया जाना चाहिए।